



2026: AHC: 2893

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

आपराधिक प्रकीर्ण जमानत प्रार्थना-पत्र संख्या- 40817 सन् 2025

कपिल

.....आवेदक

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....विपक्षी पक्ष

आवेदक की ओर से अधिवक्ता

:- विजय प्रताप सिंह

विपक्षी पक्ष की ओर से अधिवक्ता

:- जी.ए.

न्यायालय संख्या - 68

माननीय न्यायमूर्ति श्री अशुतोष श्रीवास्तव

आवेदक की ओर से विद्वान अधिवक्ता श्री विजय प्रताप सिंह, राज्य की ओर से विद्वान ए० जी० ए० श्री पुनीत कुमार सिंह, विद्युत विभाग की ओर से विद्वान अधिवक्ता श्री नागेन्द्र कुमार तिवारी के प्राधिकार के अधीन श्री शांतनु कुमार पांडेय को सुना गया तथा अभिलेख का अवलोकन किया गया।

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 483 के अंतर्गत वर्तमान जमानत प्रार्थना-पत्र अभियुक्त-आवेदक कपिल की ओर से, पुलिस थाना- मंसूरपुर, जनपद- मुज़फ़्फ़रनगर में विद्युत अधिनियम की धारा 136, 137 के अंतर्गत पंजीकृत वाद अपराध संख्या 249 सन् 2025 में, अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष विचारण के लंबित रहने के दौरान जमानत पर मुक्त किए जाने की प्रार्थना के साथ प्रस्तुत किया गया है।

आवेदक के विद्वान अधिवक्ता ने तर्क दिया है कि अभियुक्त-आवेदक निर्दोष है। उसे इस विशिष्ट वाद अपराध संख्या में मिथ्या रूप से फंसाया गया है और वह दिनांक 3.9.2025 से कारागार में निरुद्ध है। आवेदक के विद्वान अधिवक्ता का कथन है कि आवेदक प्रथम सूचना रिपोर्ट में नामजद नहीं था। आवेदक और सह-अभियुक्त नितिन के विरुद्ध 10.700 किलोग्राम एल्यूमीनियम तार की मिथ्या बरामदगी दिखाई गई है। उसके विरुद्ध आपराधिक पूर्ववृत्त के चार वाद हैं, जिनका पर्याप्त रूप से स्पष्टीकरण किया गया है तथा जमानत पर उन्मोचित किए जाने

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



की स्थिति में उसके न्याय की प्रक्रिया से पलायन करने अथवा साक्ष्य के साथ छेड़छाड़ करने की कोई संभावना नहीं है। अतः, जमानत हेतु प्रार्थना की गई है।

विद्वान ए.जी.ए. ने जमानत की प्रार्थना का प्रबल विरोध किया है।

उपरोक्त समस्त तथ्यों एवं परिस्थितियों, आरोपों की प्रकृति, दोषसिद्धि की स्थिति में दण्ड की गंभीरता तथा सहायक साक्ष्यों की प्रकृति, साक्षियों से छेड़छाड़ की युक्तिसंगत आशंका तथा प्रथम दृष्टया प्रकरण पर विचार करते हुए, किंतु प्रकरण के गुण-दोष पर कोई टिप्पणी किए बिना, जमानत का एक प्रकरण निर्मित होता है।

तदनुसार, जमानत प्रार्थना-पत्र **स्वीकार** किया जाता है।

उपरोक्त वर्णित वाद-अपराध संख्या में संलिप्त अभियुक्त-आवेदक, **कपिल** को संबंधित न्यायालय की संतुष्टि के लिए समान राशि के एक व्यक्तिगत बंधपत्र तथा दो विश्वसनीय प्रतिभु को निष्पादित करने पर, निम्नलिखित शर्तों के अधीन, जमानत पर उन्मोचित किया जाए:

- i. आवेदक साक्ष्यों के साथ छेड़छाड़ नहीं करेगा।
- ii. आवेदक किसी भी आपराधिक गतिविधि में संलिप्त नहीं होगा।
- iii. आवेदक अभियोजन पक्ष के साक्षियों पर दबाव नहीं डालेगा/ उन्हें भयभीत नहीं करेगा तथा विचारण में सहयोग करेगा।
- iv. आवेदक विचारण न्यायालय द्वारा नियत प्रत्येक एवं हर तिथि पर नियमित रूप से उपस्थित होगा, जब तक कि संबंधित न्यायालय द्वारा अधिवक्ता के माध्यम से उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट प्रदान न कर दी जाए।

उपरोक्त में से किसी भी शर्त के उल्लंघन की स्थिति में, अधीनस्थ न्यायालय को उसकी जमानत निरस्त करने की कार्यवाही हेतु स्वतंत्रता होगी।

(आशुतोष श्रीवास्तव, न्यायमूर्ति)

7 जनवरी, 2026

रवि प्रकाश

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।